



यह संस्थान 1970 ई. से इस गोडवाड के सर्वेक्षण-शोध कार्य व लेखन कार्य में जुटा हुआ है। सन् 2001 में इस कार्य हेतु आवश्यकता समझ कर इसके श्री गोडवाड सांस्कृतिक शोध संस्थान के नाम से कार्यकारणी समिति गठन कर सन् 2002 में पंजीयन कार्य पूरा करवाया गया। इस कार्य में गोडवाड के अतिविशिष्ट समर्पित भाव से सेवार्थ-कर्मठ कार्यकर्ता, वदिवान-श्रेष्ठ, भू.पू. शासक व मातृभूमि से उत्कृष्ट महानुभावों के सौहार्दता के प्रथम स्थान दिया गया। गत वर्षों से 2015 तक इस क्षेत्र में श्री गोडवाड सांस्कृतिक शोध संस्थान ने अपना धरातल दृढ़ कर नव कीर्तमान स्थापित किया है। स्वायत्त संस्था के रूप में शोध, पुरातत्व ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में 8वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक महत्वपूर्ण नरिमाण, खोज, शिलालेख, आलेख, पट्टे, परवाने, सक्के, चित्र, शिल्प, नरिमाण-पृष्ठभूमि आंकलन ऐसे कृति कर्यों का संग्रह करके आलेख की तैयारी पूर्ण की। विश्वास है कि हम सभी नीव की ईंट बनकर इस भूमि पर गोडवाड का प्रतीक संस्थान के ऐसा रूप दें जो सहस्रों वर्षों तक अपनी गौरवशाली गाथा का साहित्य इतिहास में अपना रंग जमाकर कीर्तमान पताक फहराए, आईये इसमें आपका भी सहयोग महत्वपूर्ण है।